www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 12, 1-3

Article ID: 237

बैंगन के पौधों में तना एवं फल बेधक कीट एवं रोकथाम

रत्नाकर पाठक[1*], अरविंद कुमार त्रिपाठी[2], राम प्रकाश[3]

[1](शोध छात्र) कीट विज्ञान विभाग
[2](शोध छात्र)कृषि वानिकी
[3](शोध छात्र) शस्य विज्ञान विभाग
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

सब्जियों की खेती में बैंगन एक महत्वपूर्ण फसल है। इसकी खेती बड़े पैमाने पर देश के लगभग सभी राज्यों में की जाती है । बैंगन की खेती अधिक ऊंचाई वाले स्थानों को छोड़कर भारत में लगभग सभी क्षेत्रों में प्रमुख सब्जी की फसल के रूप में की जाती है। सब्जी के साथ-साथ बैगन में प्राकृतिक और कुछ अद्भुत औषधीय गुण पाए जाते हैं जैसे- सर्वप्रथम अगर देखा जाए तो बैगन में फेनोलिक कार्बनिक एसिड उच्च मात्रा में पाया जाता है जो टाइप टू डायबिटीज की समस्या के जोखिम को कम करने में सहायता करता है,यानी हमारी ब्लड शुगर लेवल को कम करता है। बैगन में विटामिन ए, बी ,सी प्रचुर मात्रा होने के साथ-साथ इसमें आयरन, जिंक, फोलिक एसिड इत्यादि चीजें पाई जाती है जो हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी मजबूत करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं और हमारी याददाश्त भी बढ़ती है |आधुनिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि बैगन प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, हमारी पाचन शक्ति को मजबूत करता है, एनीमिया की समस्या को कम करता है ,कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है तथा शरीर में ऊर्जा का निर्बाध संचरण करता है, अनिद्रा के उपचार में भी इसकी काफी अच्छी भूमिका मानी जाती है ,यह न्यूरोट्रांसमीटर्स को एक्टिवेट करने में काफी अच्छी भूमिका अदा करते हैं इस प्रकार से हम समझ सकते हैं कि बैगन हमारी दैनिक जीवन के लिए हमारी स्वास्थ्य के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

तना एवं फल बेधक कीट :

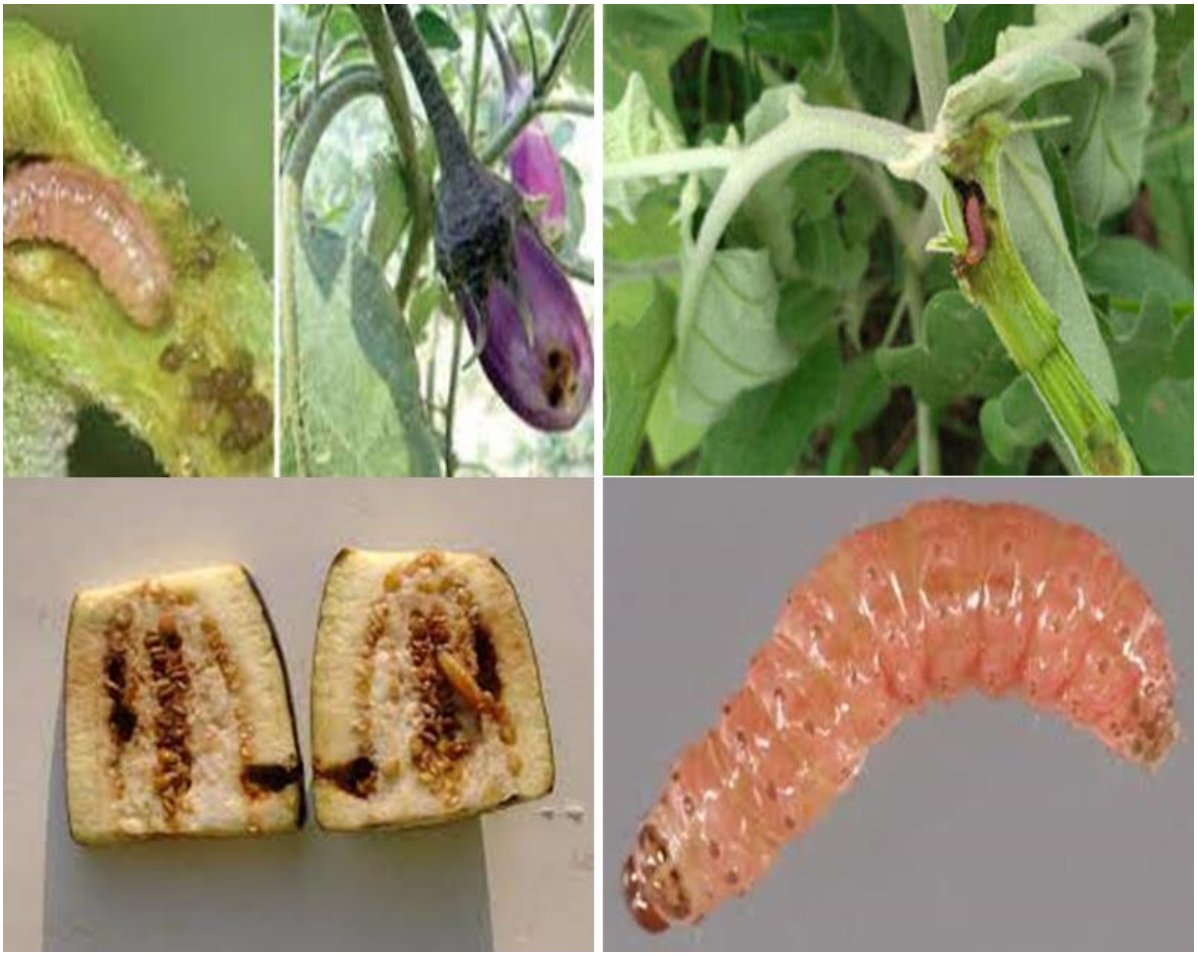

पहचान एवं लक्षण : पूरी तरह विकसित लार्वा सुदृढ़,गुलाबी रंग और भूरे सिर वाला होता है । इस कीट की वयस्क मादायें की फरवरी मार्च में दूधिया रंग के अंडे एक एक करके या समूह में पत्तियों की निचली सतह, तनों, फूलों की कलियां या फल के आधार पर देती है। 3-5 दिनों बाद अंडों से लार्वा निकलने के बाद तने व शाखाओं के अग्र भाग में घुस जाती है, जिससे बाद में इस कीट का लार्वा ऊपरी नए तने, कोमल पत्तियों एवं फूलों को और नई कलिकाओं को छेद करके नष्ट करता है, जिसके प्रभाव से फल समय से पहले झड़ जाता है और खाने योग्य नहीं रहता है । उसके पश्चात् फलों को छेदकर सड़ा देते जिससे काफी आर्थिक क्षति होती है । कभी-कभी फल के अंदर इस कीट को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, इस कीट के प्रभाव से फल अपना आकार खो देते है । फलों के अंदर घुसने व बाहर निकलने का स्थान सूखे मल से बंद हो जाता है । प्रभावित फलों का आकार टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है । कीट का प्रकोप अधिक होने पर पौधों के विकास में बाधा आती है । इस कीट का नियंत्रण अत्यंत आवश्यक हो जाता है ,क्योंकि अगर इनकी संख्या बढ़ती गई तो संपूर्ण फसल को काटकर नष्ट कर देंगे, वह खाने योग्य नहीं रह जाएगा ना तो वह बाजार में भेजने योग्य रह जाएगा, ऐसे में प्रबंधन के लिए विभिन्न बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है।

जीवन चक्र : बैंगन तना और फल छेदक कीट के जीवन चक्र की चार अवस्थाएं अण्डा, लार्वा, प्यूपा व वयस्क है । इस कीट की लार्वा अवस्था 12-15 दिनों की होती है। प्यूपा अवस्था 6-10 दिनों की होती

है जिसके बाद वयस्क बनते हैं। वयस्क पतंगा 2-5 दिन जीवित रहता है। मौसम के अनुसार एक जीवन चक्र 21-43 दिनों में पूरा करता है। एक बर्ष के सक्रिय समय में इसकी पांच पीढ़ियां तक हो सकती है।

प्रबंधन-

- सर्वप्रथम यह ध्यान देने योग्य बात होती है की जिस क्षेत्र पर एक बार बैंगन लगा दिया जाए तो अगली बार फिर उसी क्षेत्र पर बैगन ना लगाया जाए, कोई न कोई फसल बदल-बदल कर लगाया जाए, ऐसी जगह लगाये जहां पहले से बैगन ना लगा हो, तथा दूसरा शोध संस्थान द्वारा जारी विभिन्न प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव कर नर्सरी तैयार करे।
- यदि आप की फसल में इसका प्रकोप दिखना शुरू हो जाए ,तो सर्वप्रथम आप प्रभावित पेड़ को उखाड़ कर नष्ट कर दें और यदि फल गिरा हो और उस फल पर कीट का प्रभाव दिखे तो उस फल को भी उस क्षेत्र से हटा दें ।
- कीट के अंडों को एकत्र कर के नष्ट कर दें ।
- खेत को खरपतवार रहित रखें।
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन कर दें ।
- इल्लियों को इकट्ठा कर के नष्ट कर दें ।
- प्रभावित पत्तियां, टहनियां व फलों को तोड़कर खेत के बाहर नष्ट कर दें यदि गंभीर प्रकोप हो तो पूरे पौधे को उखाड़ के नष्ट कर दें ।
- तना एवं फल छेदक के नाश के लिये प्रति सप्ताह के अंतराल पर 1 से 1.5 लाख प्रति हेक्टेयर की दर से अंडानाशक टी. ब्रासिलिएंसिस छोडें ।
- इन पतंगो को आकर्षित कर पकड़ने के लिए 5 से 6 फेरोमान ट्रेप प्रति एकड़ में लगाएं ।
- फूल निकलने के समय 15 लीटर पानी में 2 से 8 मिली लीटर कोराजेन 18.5 प्रतिशत एस.सी का घोल बनाकर 10 से 15 दिनों का अन्तराल पर छिड़काव करें ।
- कीटों का हमला होते ही ट्राइजोफांस 40 ई.सी. 750 मिली लीटर या क्वीनालफांस 25 ई.सी. 1.5 लीटर दवा को 600 से 700 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए ।